भाषा का अर्थ और परिभाषा

- भाषा का अर्थ -बोलना अथवा कहना

- भाषा के दो रुप -मानव भाषा और मानवेतर भाषा
- भाषा के माध्यम- दृष्टि,स्पर्श,गंध,ध्वनि,श्रवण,

भाषा की परिभाषा-

- "भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते है।

****भाषा की परिभाषा****

“भाषा मानव उच्चारण अवयवों द्वारा उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है जिससे भाषा-समाज के लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान करता हैं।”

भोलानाथ तिवारी

“मैं भाषा को वाक्यों का एक समूह समझता हूँ जो निश्चित तत्वों के समूह से संरचित होते हैं।”

चाम्स्की

भाषा के अभिलक्षण

मानव भाषा में है जो मानवेतर भाषा नही वह सारे भाषा के अभिलक्षण कहे जा सकते हैं।

- यादृच्छिकताः-अर्थ है-माना हुआ। समाज की इच्छानुसार माना हुआ। 'तगारा' के लिए अलग अलग समाज में अलग अलग शब्द है।
- सृजनात्मकताः-शब्द और रूप भाषा में सीमित लेकिन प्रयोग के आधार पर अनेक रूप बनाते हैं। जैसे-मैं'वह'तुम,बुलवाना शब्दों से कई वाक्य बनाना मानवीय भाषा की सृजनात्मकता है। जैसे-'मैंने उसे तुमसे बुलवाया','उसने मुझे तुमसे बुलवाया' आदि...

- अनुकरणग्राह्यताः-जन्म से कोई भाषा नहीं जानता, माँ के पेट से कोई बच्चा भाषा सीखकर नहीं आता। व्यक्ति समाज में रहकर अनुकरण से भाषा सीखता है।
- परिवर्तनशीलताः- जैसे-संस्कृत का 'कर्म' प्राकृत में 'कम्म' हो गया तो आज 'काम' के लिए प्रयुक्त होता है।इस तरह ....
- विविक्तताः- मानव भाषा का स्वरूप तत्वतः कई घटकों या ईकाइयों में विभाज्य है। जैसे-वाक्य एकाधिक शब्दों से बनता है तथा शब्द एकाधिक ध्वनियों से। यह बहुघटकता या विविक्तता अन्य जीवों में नहीं मिलती।

- द्वैतताः- वाक्य या उच्चार की दो 1.सार्थक 2.निरर्थक इकाइयाँ होती है। दो स्तरों की स्थिति को द्वैतता कहते हैं। 'आप अच्छे हैं' वाक्य में आप+ अच्छे+हैं सार्थक इकाइयाँ(रूपिम)हैं।दूसरे स्तर की अ+अ+प+अ...आदि(स्वनिम) ध्वनियाँ हैं।
- भूमिकाओं का परस्पर परिवर्तनीयताः- वक्ता-श्रोता. वकता जब बोलता है तब श्रोता सुनता है,फिर जब श्रोता उत्तर देता है तब वह श्रोता हो जाता है।
- अंतरंणताः- (स्थान और काल का अन्तरण) मानव भाषा में वर्तमान के साथ-साथ भूत-भविष्य के विषय में कहने में समर्थ है।
- मौखिकता-श्रव्यताः-भाषा मुँह से बोली जाती है,कान से सुनी जाती है।जो अन्य में नहीं..